शोध प्रारूप

नागपुरी लोक कलाकार महाबीर नायक जीवन एवं साहित्य : एक अध्ययन

पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप
स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग
संकाय : जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा
राँची विश्वविद्यालय, राँची
वर्ष - 2024

शोध निर्देशक:-

डॉ० रामजय नाईक
सहायक प्राध्यापक
नागपुरी भाषा विभाग
जगन्नाथ नगर महाविद्यालय, धुर्वा, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी:-

पूजा तिर्की
एम. ए. नागपुरी
यू.जी.सी. नेट
स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

नागपुरी लोक कलाकार महाबीर नायक जीवन एवं साहित्य : एक अध्ययन

1. भूमिका

हमारे भारत देश के अन्य राज्यों की तरह ही झारखण्ड भी भारत का प्रमुख राज्य है इस राज्य का नाम प्राकृतिक स्थिति के आधार पर दी गई है। इस राज्य में हरियाली ही हरियाली देखने को मिलती हैं। झारखण्ड में अनेक प्रकार की संस्कृति बसती है इसके लिए एक उक्ति है "बाहर महीना में तेरह परब" जिससे यहाँ की संस्कृति देखते ही बनती हैं।

प्रकृति के अनुरूप ही संस्कृति का निर्माण होता है और संस्कृति का सर्वोच्च उपादान है संगीत। अप्रतिम है झारखण्ड की प्रकृति और संस्कृति। यहां की आदिम संस्कृति में विद्यमान है संगीत की अनगिनत स्वर लहरिया संगीत के बिना झारखण्ड निष्प्राण हैं।

इसी झारखण्ड की गोद में जन्में बहुमुखी प्रतिभा के धनी महाबीर नायक जी, जिनका व्यक्तित्व सादा एवं सरल है जो निष्ठा से अपने हर एक कार्य को सम्पन्न करते हैं | बिना किसी से ईष्या किए सभी को समान दर्जा देते हैं। मुस्कान इनके मुख पे सदा बनी रहती है संगीत से सम्पन्न गीतों के धनी भिनसरिया राग राजा महाबीर नायक जी का जन्म पिठोरिया और ठाकुर गाँव के बीच उरूगुटू में 24 सितंबर 1942 ई. को हुआ। फूदु नायक और तेतरी देवी की संतान महाबीर नायक उरूगुटू गाँव में पले बढ़े। भवानी शंकर हाई स्कूल से मैट्रिक और हटिया से आई.ए.आई.टी.सी. और सी.टी.आई की पढ़ाई पूरी की 1962 ई० से 2001 ई० तक एच.ई.सी. हटिया में कार्यरत रहें फिलहाल ये हटिया में ही रहते है।

बचपन से ही ये गीत संगीत में विशेष रूचि रखते हैं। फूदु नायक और तेतरी देवी की संतान महाबीर नायक जी अपने पाँच बहन दो भाईयों में से सबसे छोटे हैं। इनके दादाजी और पिताजी दोनों गाँव के झूमराहा थे जो मरदाना झूमर नृत्य में पारंगत थे। गाँव

के आस-पास जहां कहीं भी गीत संगीत कार्यक्रम का आयोजन होता तो नायक जी वहां पहुँच के गीत संगीत का आनन्द उठाते एवं स्वयं गीत गाने लगते, गीत गाने के साथ-साथ पढ़ाई लिखाई में भी अव्वल थे विकट परिस्थित में भी अपनी गायकी को जारी रखा जीवन पथ के उतार-चढ़ाव में रूके नहीं निरंतर आगे बढ़ते गए। किशोरावस्था में ही इन्हें वचन देवी के रूप में अपनी जीवन संगिनी मिली और नागपुरी साहित्य के मूर्धन्य कवि घासी राम की रचनाओं को गाते एवं उनसे प्रेरित होकर काव्य सृजन की नींव डाली। सात बेटियों के पिता नायक जी की कला-साधना का सिलसिला चलता आ रहा है।

आज भी इनकी गायकी की गति कम नहीं हुई। पिछले चार दशक से नागपुरी लोक संगीत के लिए समर्पित श्री नायक जी ने झारखण्ड से 20 कलाकारों के साथ ताइवान की यात्रा की है कई देशों में झारखण्डी लोक कला का परचम लहराया है |

2. अनुसंधानिक विषय

झारखंड की कला संस्कृति, संगीत, नृत्य की अपनी विशेष पहचान है | झारखंड की कला संस्कृति अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपना परचम लहराया है और नृत्य, गीत, संगीत में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है | यहाँ की कला संस्कृति, गीत संगीत का महत्व आदिकाल से ही रहा है और लोगों के रग-रग में बसा हुआ है |

झारखंड के लोक संगीत के संदर्भ में पारंपरिक लोकगीत संगीत के अच्छे जानकार हैं नागपुरी लोक कलाकार महाबीर नायक, जिन्होंने अपने पूरे जीवन काल में अपनी अथक परिश्रम एवं सहयोग से नागपुरी लोक संगीत को जीवित रखने में अहम भूमिका निभाई है | श्री नायक अपनी बाल्यावस्था से ही नागपुरी नृत्य, गीत में रुचि रखते हैं | इनके परिवार में ही कई रिझवार हुए उनके पिता और दादा जो मरदाना झूमर के जानकार थे इन्हीं के साथ उनको अपनी कला संस्कृति से प्रेम हुआ और इन्होंने अपनी सारी उम्र अपने गीतों में बसे राग-रागिनी को समर्पित कर दिया | नागपुरी के सभी रागों के जानकार हैं महाबीर नायक, वे मर्दाना पक्ष के सभी रागों को गाते एवं सिखाते भी हैं |

मर्दाना पक्ष के गीतों के साथ-साथ महिला पक्ष के गीतों को भी ये बखूबी गाते हैं | महाबीर नायक आज भी झारखंडी पारंपरिक नागपुरी लोकगीत, संगीत में अहम योगदान दे रहे हैं | नायक जी अपने गांव के टोले-मोहल्ले से लेकर राजकीय, राष्ट्रीय स्तर पर भी नागपुरी पारंपरिक लोकगीत,संगीत को प्रतिस्थापित किए हैं | इनके जीवन के विभिन्न पलों में लोक संगीत का विशेष महत्व रहा है |

श्री नायक झारखंड के लोगों को जागृत करने उनके आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक उत्थान के लिए कार्यक्रम को आयोजित करने एवं उनका मार्गदर्शन देने में भी अपना योगदान दिया है | झारखंड आंदोलन में भी महाबीर नायक बी.पी. केसरी के साथ रहे और पद्मश्री मुकुंद नायक, पद्मश्री मधु मंसूरी 'हँसमुख' के साथ मिलकर अपने झारखंड के कला संस्कृति को विदेश तक पहुंचाया | अभी महाबीर नायक हटिया में रहकर शोध करने वाले विद्यार्थियों को झारखंड के गीत-संगीत, राग-रागिनियों का ज्ञान दे रहे हैं जिनसे विद्यार्थियों का मार्गदर्शन हो रहा है| उनकी यही तमन्ना है कि लोग नागपुरी के राग-रागिनी को सीखकर पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाएं एवं अपनी संस्कृति को बचाएं|

3. <u>प्रेरणा</u>

प्रस्तुत शोध विषय की प्रेरणा मुझे एम.ए. एवं डॉ० रामदयाल मुण्डा राजकीय कला भवन, होटवार में अध्ययन के दौरान अपने शिक्षकों एवं सहपाठियों से मिली। जनजातीय एवं क्षेत्रीय विभाग, रांची विश्वविद्यालय रांची से स्नातकोतर (एम.ए.) के दौरान मुझे पता चला कि बहुत सारे आधुनिक नागपुरी कवियों के जीवन एवं उनकी रचनाएं उपेक्षित पड़े हुए हैं। अतः मुझे लगा कि अगर मेरे जीवन में शोध कार्य का अवसर मिला तो मैं आधुनिक कवि महाबीर नायक जी की जीवनी और उनकी बिखरी पड़ी रचनाओं को समेटने की कोशिश करूंगी। जिसे आने वाली पीढ़ी को इस शोध कार्य के द्वारा कुछ जानकारियां दे सकूँ।

4. शोध की परिकल्पना

झारखण्ड की धरती में अनेक नागपुरी संस्कृति, सभ्यता, भाषा, गीत-संगीत पर आधारित कवि, लेखक, गायक, गीतकार का जन्म हुआ जिनहोंने अपनी काव्य साधना एवं मधुर आवाज से झारखण्ड की सभ्यता-संस्कृति को धरोहर रूप में संभाल कर रखा अतः उनके कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण हैं।

नागपुरी भाषा साहित्य में प्राचीन काल से ही एक से बढ़कर एक कवि, गायक, लेखक, रचनाकार होते रहे हैं और इनमें से कई लेखकों पर शोध कार्य हुए हैं। जिनमें प्रफुल्ल कुमार राय, पीटर शांति नवरंगी, मधु मंसूरी 'हँसमुख', लाल रणविजय नाथ शाहदेव, सहनी उपेन्द्र पाल नहन आदि जैसे लेखकों पर शोध कार्य संपन्न हो चुके हैं। इसी क्रम में प्रस्तावित शोध कार्य लोक कलाकार महाबीर नायक पर शोध कार्य की योजना मन में एम°ए° पाठ्यक्रम के दौरान से चली आ रही थी और इस महान कलाकार के ऊपर शोध कार्य प्रारंभ करना चाहती हूँ। इनकी रचनाओं एवं संग्रहों को समाज के समक्ष यथार्थ रख सकूं नागपुरी भाषा साहित्य में अभिरूचि के साथ-साथ भाषा ज्ञान की क्षमता एवं योग्यता का विकास होगा।

इस शोध कार्य से नागपुरी लोक कलाकार महाबीर नायक के कार्यों को सम्मान प्राप्त हो तथा इससे नागपुरी क्षेत्र में लोगों को एक अभिप्रेरणा रूप दे सकूं।

5. शोध का उद्देश्य

किसी शोध कार्य को प्रारंभ करने के पूर्व शोध विषय निर्धारित की जाती है। इस शोध प्रबंध का निम्नलिखित उद्देश्य हैं

- नागपुरी भाषा का उद्भव एवं विकास का अध्ययन करना |
- नागपुरी भाषा व सहित्य का गहन अध्ययन करना |

- नागपुरी भाषा सहित्य के आने वाले शोधार्थियों के लिए सूचना संकलन, संग्रहण एवं विश्लेषण की मार्ग प्रशस्त करना ।
- नागपुरी लोक कलाकार महाबीर नायक की कृतियों को सामाजिक, सांस्कृतिक तथा भाषायी जनजीवन की कसौटी पर रखना ।
- नागपुरी भाषा एवं इसके शैक्षणिक तथा साहित्यिक विकास में महाबीर नायक के योगदान को दर्शाना ।

6. <u>शोध का महत्व</u>

इस शोध प्रबंध से नागपुरी लोक कलाकार महाबीर नायक जीवन एवं साहित्य : एक अध्ययन शोध से समाज में निम्नलिखित प्रभाव पड़ेगा -

- इस शोध प्रबंध के प्रकाशित होने से आधुनिक नागपुरी कवि महाबीर नायक का सम्मान बढ़ेगा।
- निज भाषा प्रेम एवं अपनी संस्कृति के प्रति लोगों का रूझान बढ़ेगा तथा एक नयी जागृति उत्पन्न होगी।
- इस शोध प्रबंध के माध्यम से समस्त नागपुरी भाषा-भाषियों और समाज के कवियों, साहित्यकारों का सम्मान बढ़ेगा।
- इस शोध प्रबंध से नागपुरी लोक गायक महाबीर नायक के काव्य गुणों एवं रचनाओं को रांची विश्वविद्यालय के माध्यम से लोगों एवं विद्यार्थियों तक पहुँच बनेगी |
- इनके अप्रकाशित एवं प्रकाशित गीतों को पढ़ने एवं समझने का अवसर प्राप्त होगा।

- कालांतर से झारखण्ड लोक गीत एवं अनेक राग-रागिनियों, संस्कृति को अपना योगदान देने वाले नागपुरी लोक कलाकार महाबीर नायक के वास्तविक रूप में सम्मान प्राप्त जो किसी आमूल्य धरोहर को संरक्षित करने के समान होगा।
- इससे समाज में हमारी संस्कृति के प्रति सुद्दढ़ विचारधारा निर्मित होगी जब हम उनके विचारों, भावनाओं को विवरण के रूप में पढ़ेंगे ।
- वर्तमान में लोगों में यह रूझान (रूचि) कम होती जा रही है और पाश्चात्य दर्शन के पीछे जा रही हैं, जबकि हमारे झारखण्ड की भूमि में ऐसे लोक कलाकार के शोध एवं उल्लेख से लोगों का रूझान झारखण्ड के लोक कलाकारों की तरफ आयेगा और लोग विलुप्त लोक कलाकारों के प्रति उन्हें जागृत करने एवं उनके गीतों को संरक्षित एवं सुशोभित करने के लिए आगे आयेंगे ।

7. <u>विषय से संबंधित पूर्व शोध कार्यों का विवरण</u>

मेरे द्वारा प्रस्तावित शोध प्रबंध शोध प्रबंधकीय क्षेत्र में नया विषय है अपितु प्रस्तावित शोध प्रबंध आधारित विषय से संबंधित नागपुरी कवियों, साहित्यकारों, लेखकों, गायकों पर अनेक पुस्तक उपलब्ध है।

जैसे -

1. पीटर शांति नवरंगी व्यक्तित्व एवं कृतित्व आदि ।
2. सहनी उपेन्द्र पाल 'नहन' : व्यक्ति एवं कृतित्व |
3. प्रफुल्ल कुमार राय : एक मूल्यांकन |
4. नागपुरी कवि कंचन : जीवन एवं साहित्य |
5. अधरतिया राग सम्राट - गोविंद शरण लोहरा |

अतः उपर्युक्त पुस्तक एवं अन्य सहायक ग्रंथ के द्वारा इस प्रस्तावित शोध विषय को सम्पन्न करने में मुझे आधार ग्रंथ के रूप में सहायता एवं मार्ग दर्शन भी प्रदान करेगी।

8. शोध विधि

1. साक्षात्कार विधि
2. अवलोकन विधि
3. प्रश्नावली विधि
4. विश्लेषणात्मक अध्ययन
5. आलोचनात्मक विधि
6. संकलन विधि

9. सामग्री संकलन के लिए उपयोग में आने वाले विभिन्न सहायक उपकरण –

1. पेन, कॉपी
2. कैमरा
3. टेप रिकॉर्डर
4. कम्प्यूटर
5. संदर्भ ग्रन्थ
6. शोध आलेख
7. विभिन्न पत्र-पत्रिकाएं
8. सामाजिक, सांस्कृतिक विषयक आलेख
9. पुस्तकालय
10. प्रासंगिक सामग्री अन्य वैधानिक साधन
11. पेन ड्राइव (डाटा संग्रह), इंटरनेट का प्रयोग

अध्यायीकरण :-

शोध विषय : नागपुरी लोक कलाकार महाबीर नायक जीवन एवं साहित्य : एक अध्ययन

प्रस्तावना :

क) शोध की परिकल्पना

ख) शोध की प्रेरणा

ग) शोध का उद्देश्य

घ) शोध का महत्त्व

ङ) विषय से सम्बंधित पूर्व शोध कार्यों का विवरण

च) शोध विधि

छ) विषय विश्लेषण

प्रथम अध्याय

नागपुरी लोक कलाकार महाबीर नायक की जीवन रेखाएँ

क) जन्म एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि

ख) शिक्षा, बाल्यावस्था

ग) किशोरावस्था, युवावस्था, विवाह, यौवनावस्था

घ) प्रौढ़ावस्था

ङ) सेवा

च) नागपुरी भाषा की ओर झुकाव एवं प्रेरणा

द्वितीय अध्याय

नागपुरी लोक कलाकार महाबीर नायक की वैयक्तिक अवस्थाएँ

आंतरिक विशेषता

क) कर्मठ एवं लगन

ख) धार्मिक आचरण

ग) प्रकृति प्रेम

घ) संगीत प्रेम

ङ) उदार ह्रदय

च) गृहस्थ अवस्था

छ) स्वाभिमानी

ज) द्दढ़ निश्चयी

झ) न्यायप्रिय

ञ) कर्तव्यपरायण

ट) संग्रहवृति

बाह्य विशेषता

क) रंग-रूप, आकर, पहनावा, खाना-पीना (पसंद)

ख) सामाजिक सद्भाव

ग) विभिन्न राग-रागिनियों के जानकार

तृतीय अध्याय :

नागपुरी लोक कलाकार महाबीर नायक की समकालीन परिस्थितियां

क) प्राकृतिक स्थिति

ख) सामाजिक स्थिति

ग) राजनीतिक स्थिति

घ) धार्मिक-सांस्कृतिक स्थिति

ङ) साहित्यिक स्थिति

चतुर्थ अध्याय :

नागपुरी लोक कलाकार महाबीर नायक की समस्त रचनाओं का अध्ययन

(अ) पद्य साहित्य

(क) गीत

- भक्ति गीत
- श्रृंगारिक गीत
- राष्ट्रभक्ति गीत
- प्रकृति गीत
- सामाजिक गीत

(ख) महाबीर नायक के गीतों की विशेषता

- निजीपन
- एकात्मक
- ध्वनात्मक

- संगीतात्मक
- सादगी
- एकल भावना
- संगीत गुणवत्ता
- तीव्रता
- स्वच्छंदता
- कल्पना
- प्रतीक

(ग) कविता

(ब) गद्य साहित्य

(क) नाटक

(ख) संस्मरण

पंचम अध्याय :

रस

(क) श्रृंगार रस

(ख)हास्य रस

(ग) करुण रस

(घ) रौद्र रस

(ङ)वीर रस

(च) भयानक रस

(छ) वीभत्स रस

(ज) अद्‍भुत

(झ) शांत रस

षष्टम अध्याय :

नागपुरी लोक कलाकार महाबीर नायक की रचनाओं का कला पक्ष

(क) शब्द-शक्ति

(ख) छंद विधान

(ग) अलंकार

(घ) प्रतीक

(ङ) बिम्ब

(च) चित्र

(छ) गुण

(ज) दोष

(झ) भाषा-शैली

सप्तम अध्याय :

नागपुरी लोक कलाकार महाबीर नायक के रचनाओं में राग-रागिनी

(अ) जनानी पक्ष

(क) एकहरिया अंगनई

दोहरी अंगनई

(ख) एकहरिया डमकच

दोहरी डमकच

झुमटा डमकच

(ग) लहसुवा

(घ) रसकिर्रा

(ङ) भदईया

(च) जनानी खेमटा

(छ) झांझइन

(ब) मरदाना पक्ष कर राग

(क) पहिल साँझा

(ख) अधरतिया

(ग) भिनसरिया

(घ) पावस

(ड़) फगुवा

(च) फगुवा पचरंगी

(छ) उदासी

- ❖ निष्कर्ष/उपसंहार
- ❖ परिशिष्ट
- ❖ चित्रावली
- ❖ आधार ग्रन्थ
- ❖ संदर्भ ग्रन्थ/पत्र-पत्रिकाएं

नोट - आवश्यक होने पर शोध प्रारूप में कुछ परिवर्तन किये जा सकते है।

शोध निर्देशक :-

डॉ० रामजय नाईक
सहायक प्राध्यापक
नागपुरी भाषा विभाग
जगन्नाथ नगर महाविद्यालय, धुर्वा, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी :-

पूजा तिर्की
एम. ए. नागपुरी
यू.जी.सी. नेट
स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

आधार ग्रंथों की सूची

क्र.	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1	'केशरी', डॉ० सविता	नागपुरी कवि कंचन : जीवन और साहित्य	नागपुरी संस्थान पिठोरिया, राँची	2015
2	'कुमार' डॉ० राम	श्री गोविन्द शरण लोहरा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	झारखण्ड झरोखा, राँची	2021
3	'गिरीराज' डॉ० गिरिधारी राम गौन्झू	पीटर शांति नवरंगी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	झारखण्ड झरोखा, राँची	2014
4	'तिवारी' डॉ० उमेश नन्द	आधुनिक नागपुरी साहित्य सन्दर्भ – प्रफुल्ल कुमार राय : एक मूल्यांकन	झारखण्ड झरोखा, राँची	2005
5	'दुबे' डॉ० विश्वनाथ	धनीराम बक्शी	शोध प्रबंध, अप्रकाशित	1981
6	'मुर्मू' डॉ० गोविन्द	रघुनाथ टुडू : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन, बरियातु, राँची	1981
7	'साहु' डॉ० गोविन्द	नागपुरी कवि घांसी राम : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	शोध प्रबंध अप्रकाशित	1976
8	'साहु' डॉ० सुखदेव	डॉ० भुनेश्वर अनुज : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	शोध प्रबंध, अप्रकाशित	2003

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

क्र.	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1	'अग्रवाल', डॉ० सुरेश	भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत	अशोक प्रकाशन 2615 नई सड़क दिल्ली	2009
2	'अनुज',डॉ० भुवनेश्वर	नागपुरी लोक साहित्य	झारखण्ड झरोखा	
3	'इन्द्र', डॉ० इन्द्रपाल सिंह	साहित्य चिन्तन	वागीश्वरी प्रकाशक, आगरा, नागपुर	1990
4	'उपाध्याय', डॉ० कृष्णदेव	लोक साहित्य की भूमिका	साहित्य भवन, प्रा० लि० इलाहाबाद	2008
5	'श्रीवास्तव', डॉ० अर्चना	भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी	2015
6	'केशरी', विसेश्वर प्रसाद	साहित्य के तत्व और आयाम	नागपुरी संस्थान, राँची	1971
7	'गुप्त', गणपतिचन्द्र	साहित्यिक निबंध	लोकभारती प्रकाशन	2011
8	'गुप्त', गणपतिचन्द्र	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांत	लोकभारती प्रकाशन	2016
9	'तिवारी', डॉ० रामचन्द्र	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रुपरेखा	लोकभारती प्रकाशन	2016
10	'दास', डॉ० श्याम सुंदर	साहित्य लोचन	सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन	2018
11	'प्रमाणिक', शिवनाथ	खोरठा लोक-साहित्य	खोरठा साहित्य-संस्कृति परिषद, बोकारो	2004
12	'प्रसाद', डॉ० दिनेश्वर	लोक-साहित्य और संस्कृति	जय भारती प्रकाशन, इलाहाबाद	2012
13	'बासंती', डॉ० कुमारी	नागपुरी गीतों की छंद रचना	किशोर विद्या निकेतन, बी 2/236 - ए, भदौनी, वाराणसी	1993

14	'मिश्र', डॉ० भागीरथ	काव्यशास्त्र	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी	2010
15	'राय', गुलाब	काव्य के रूप	आत्माराम एण्ड संस, 1376 कश्मीरी गेट दिल्ली	2018
16	'शर्मा' देवेन्द्र नाथ	काव्य के तत्व	लोकभारती प्रकाशन, गोलघर वाराणसी	2015
17	'शुक्ल', आचार्य रामचन्द्र	हिन्दी साहित्य का इतिहास	लोक भारती प्रकाशन, पहली मंजिल दरबारी बिल्डंग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद	2010
18	'साहु', डॉ० त्रिवेणी नाथ	नागपुरी काव्य में प्रकृति	किशोर विद्यानिकेतन 2008 बी-2/236- ए भदौनी, वाराणसी - 1	2008

पत्र-पत्रिकाएँ

1. आज- सामलौंग, राँची ।
2. आदिवासी - बिहार सरकार, राँची ।
3. 'गोतिया' - ढुमसा टोली, चुटिया, राँची ।
4. 'डहर' - छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ ।
5. दैनिक जागरण- कोकर, राँची ।
6. दैनिक भास्कर - रातू रोड, राँची ।
7. नागपुरी – वी/205 जगन्नाथपुर, राँची ।
8. प्रभात खबर - कोकर, राँची ।
9. राँची एक्सप्रेस, अपर बाजार, राँची ।
10. शंखनांद – प्र० नागपुरिया सांस्कृतिक संघ, सिमडेगा ।
11. सहिया' - एम० जी० टावर 23 पूर्वी जेल रोड, राँची ।
12. सन्मार्ग - हरमू रोड, राँची ।
13. 'संगोम' - आई० टी० पब्लिकेशन कोकर, राँची ।
14. हिन्दूस्तान - कोकर, राँची ।